पुस्तक-समीक्षा

डा. शम्भु शरण श्रीवास्तव

पुस्तक विमोचन समारोह में मंचासीन

बिहार के विभाजन की तरफ इशारा करती एक किताब

हाल ही प्रकाशित 'उपेक्षा और पिछड़ेपन का दंश झेलते उत्तर बिहार का संकल्प' नामक किताब ने देश में, खास कर बिहार में एक नई बहस छेड़ दी है। उत्तर बिहार के करोड़ों लोग दशकों से राजनीतिक छलावे के शिकार रहे हैं। किताब में उठाए गए सामाजिक, आर्थिक, प्रशासनिक, शैक्षिक, किसानी और एक तरफा विकास की मनमानी राजनीति जैसे मुद्दों ने वहां के राजनीतिक दलों और नेताओं में हलचल पैदा कर दी है। इन इलाकों में उपेक्षा और बेरोजगारी का सामना कर रहे लाखों युवा दूसरे राज्यों में पलायन को मजबूर हो रहे हैं। राज्य की सरकारें इस पर काबू पाने में विफल रही हैं। शिक्षा और स्वास्थ्य के साथ भी यही स्थिति है। इस व्यवस्था को लेकर राज्य की आती-जातीं सरकारों पर इन समस्याओं को नजरअंदाज करने और राजनीतिक पूर्वाग्रह का आरोप लगाया गया है।

बिहार विधान परिषद के सदस्य रहे डा. शम्भु शरण श्रीवास्तव की इस किताब में उत्तरी बिहार को लेकर जो मुद्दे उठाये गए हैं, उन पर राज्य की सत्ता राजनीति बेपरवाह है। बीते सात दशकों से भी ज्यादा समय से घनी आबादी वाले उत्तर बिहार में राजधानी पटना से स्थानांतरित करने, वहां हाई कोर्ट कीअलग बेंच, स्थापित करने अंतराष्ट्रीय हवाई अड्डा बनाने के साथ कृषि उत्पादों की एम.एस.पी. को कानूनी गारंटी देने की मांग की गई है। आक्रोश जाहिर करते हुए किताब में कहा गया है कि अपमान और उपेक्षा का कहर झेलते उत्तर बिहार उन तमाम मूल-भूत, ढांचागत विकास से वंचित राज्य का यह वह क्षेत्र है, जहां से सर्वाधिक सांसद, विधायक और निचली ईकाइयों के प्रतिनिधि चुने जाते हैं।

डा. श्रीवास्तव की पुस्तक ' उपेक्षा और पिछड़ेपन का दंश झेलते उत्तर बिहार का संकल्प' के मुताबिक उच्च शैक्षिक संस्थानों की स्थापना, उन्नत कृषि,मत्स्यपालन, पशुपालन के लिए विकसित राज्यों की तर्ज पर वैज्ञानिक व्यवस्था को नकारे जाने के कारण राज्य में पलायन बढ़ा है। रोजी-रोटी, शिक्षा तथा बेहतर स्वास्थ्य के लिए राज्य में समुचित व्यवस्था नहीं होने के कारण लोग दूसरे राज्यों की तरफ रुख कर रहे हैं। किताब में लगातार पलायन होते श्रमिक, और बाढ़ से बचाव की स्थाई व्यवस्था करने की बात कही गई है।

किताब में बिहार के मुख्यमंत्री, मंत्रियों, आला नौकरशाहों, तथा विधायकों आदि के आवास को उत्तर बिहार बिहार के विभिन्न जिलों में स्थापित करने के साथ राजधानी को उत्तर बिहार में स्थानांतरित करने की वकालत की गई है। किताब में कहा गया कि ऐसा करने से क्षेत्रीय विकास की गति तेज होगी, क्षेत्रीय संतुलन बनाने में मदद मिलेगी। सरकार और जनता के बीच की दूरी कम होने के साथ रोजगार की संभावनाओं को बल मिल सकेगा। साथ ही उत्तर बिहार के साथ राजनीतिक भेद भाव और उपेक्षा की कलंक को बहुत हद तक मिटाया जा सकता है। हालांकि किताब में जिस तरह की व्यावहारिक और विवादित मांग की गई है, उससे यह कयास लगाना फिलहाल सही नहीं होगा कि लेखक का इशारा अलग राज्य की मांग की तरफ जाता है।

किताब में उत्तर बिहार की ऐतिहासिक उपेक्षा की भरपाई के लिए दो लाख करोड़ रुपए की केंद्रीय मुआबजा दिए जाने की मांग की गई है। किताब में उठाए गए मुद्दों ने राज्य में राजनीतिक दलों को एक बड़ा मुद्दा दे दिया है।

पिछले दिनों राजधानी दिल्ली में किताब का भव्य विमोचन किया गया। इस अवसर पर पूर्व केंद्रीय देवेंद्र यादव, अनेक पूर्व विधायक, पूर्व राजनयिक , अनेक संपादक व चिंतकों के साथ दिल्ली विश्वविद्यालय के पर्व प्रोफेसर अनिल मिश्र, राजनीतिक व सामाजिक सरोकारों से सबंध रखने वाले अनेक लोगों की मौजूदगी ने बिहार को एक वार फिर से चर्चा और विमर्श में ला दिया है।

पूर्व विधान पार्षद डा.शम्भु शरण श्रीवास्तव ने राज्य की सत्ता पर उत्तर बिहार की घोर उपेक्षा और विकास को लेकर अनेक प्रमाणिक आरोप लगाए हैं। उत्तर बिहार के मौजूदा हालात के लिए लेखक ने सरकार और नेताओं को जिम्मेवार ठहराया है। राज्य के नेतृत्व की दृष्टि और समझ पर भी ऊंगलियां

उठाई गई है। किताब में अन्य दलों की पूर्व की सरकारों को भी उत्तर बिहार के साथ अनदेखी और भेदभाव के लिए कोसा गया है। विवादित किताब में राज्य के आर्थिक सर्वेक्षण का हवाला देते हुए कहा गया है कि उत्तर बिहार के तीन प्रमुख जिले मधेपुरा, सुपौल और शिवहर देश के नक्शे में सर्वाधिक गरीब व आर्थिक तौर पर कमजोर हैं। राज्य सरकार के आर्थिक सर्वेक्षण में भी बिहार में मौजूद क्षेत्रीय असमानता की बात को स्वीकार किया गया है। किताब में कहा गया है कि इन उपेक्षाओं का यह प्रमाण है कि उच्च शैक्षिक और चिकित्सीय क्षेत्र में महत्वपूर्ण माने जाने वाले संस्थान एम्स, आईआईटी और आईआईएम में से एक भी उत्तर बिहार को नसीब नहीं हुआ।

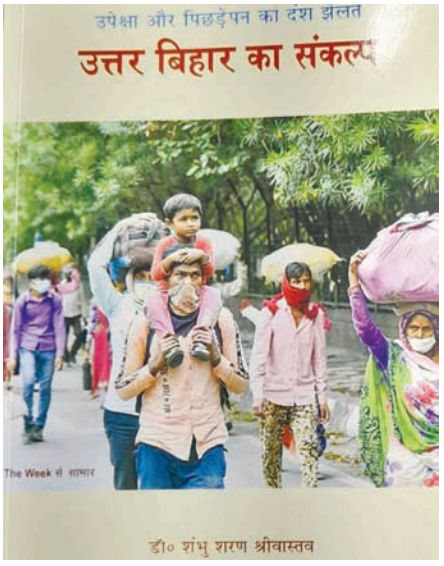

राज्य की कुल 27 विश्वविद्यालयों में से अधिकांश 18 विश्वविद्यालय दक्षिण बिहार के जिलों में हैं। सबसे ज्यादा आबादी वाले उत्तर बिहार को महज 9 विश्वविद्यालय मुअस्सर हुए। मेडिकल कालेजों को लेकर भी उत्तर बिहार के साथ भी ऐसा ही अन्याय हुआ है। राज्य की कुल 10 मेडिकल सरकारी कालेजों में से सिर्फ 3 ही राज्य में सर्वाधिक आबादी वाले इस क्षेत्र को दिए गए। राज्य की 243 सदस्यीय विधान सभा में सर्वाधिक 153 विधायक उत्तर विहार का प्रतिनिधित्व करते हैं। जबकि 40 सांसदों में से 25 उत्तर बिहार से चुने जाते हैं।

बंद पड़े चीनी मिलों को शुरू करने, परिवहन व्यवस्था को दुरुस्त करने तथा, हर साल आने वाली बाढ़ से निबटने के लिए स्थाई उपाय तलाशने केसुझाव दिए गए हैं। उत्तर बिहार को राजधानी से जोड़ने वाला महात्मा गांधी सेतु का निर्माण भी आजादी के 35 सालों बाद हुआ। राजधानी को उत्तर बिहार से जोड़ने वाला रेल पुल आजादी के 69 साल बाद अभी शुरू हुआ है। बिहार में उत्तर बिहार का इलाका देश की सबसे गरीब और पिछड़ा क्षेत्र के नक्से में शुमार है।

डा. शम्भु शरण श्रीवास्तव की किताब में उत्तर बिहार के विकास की वकालत के साथ उसके लिए कुछ बहुत ठोस और व्यावहारिक सुझाव भी दिए गए हैं। राज्यों के विभाजन को दोहराए जाने वाले तर्क से ज्यादा अच्छे, व्यावाहारिक और दमदार तर्क पेश किए गए हैं। बिहार की राजधानी को गंगा के उत्तर ले जाने और संसाधनों का दो तिहाई हिस्सा उन्ही इलाकों में खर्च करने की तार्किक दलीलें दी गई हैं। डा.श्रीवास्तव ने बिहार के अपने नेतृत्व के 70-75 साल के काम और फैसलों पर भी सवाल उठाया है।

समीक्षाः राजीव रंजन नाग

मैं पेड़ हूं

समीर उपाध्याय

मानव जीवन का आधार हूं, लेकिन कभी जताता नहीं।
मेरे बिना जीवन निराधार है, यह कभी बताता नहीं।
जात-पात के भेदभावों को कभी भी मानता नहीं।
संप्रदायों की जाल में ख़ुद को कभी भी उलझाता नहीं।
शीतल छांव देने में भेदभाव कभी भी रखता नहीं।
सुमन की सुवास फैलाने में पक्षपात कभी करता नहीं।
कुल्हाड़ी के घाव सहता हूं, 'उफ' तक बोलता नहीं।
पत्थर फेंके जाने पर भी शोर कभी भी मचाता नहीं।
पानी डालने वाले का उपकार कभी भी भूलता नहीं।
मीठे और मधुर फल खिलाना कभी भी चूकता नहीं।
पंछियों का बसेरा हूं, किंतु किराया कभी लेता नहीं।
पतझड़ में सूखा लगता हूं, किंतु आशा कभी खोता नहीं।
वसंत में पूरा खिलता हूं, किंतु शब्द कभी बोलता नहीं।
नया जीवन देता हूं, किंतु गीत कभी भी गाता नहीं।
ज़हरीली वायु पी जाता हूं, फिर भी कभी मरता नहीं।
हवा को शुद्ध करने का कर्तव्य कभी भी भूलता नहीं।
दिव्य औषधि बनकर रोगों को आगे बढ़ाने देता नहीं।
सूख जाने के बाद भी उपयोगिता कभी खोता नहीं।
धरती का श्रृंगार हूं, किंतु अभिमान कभी करता नहीं।
सिर्फ़ देने के लिए आया हूं,लेने की कोई अपेक्षा नहीं।
औरों के लिए ही जीना है, इसके सिवा कोई आशा नहीं।
समिधा बन जल जाना है, इसके सिवा कोई ख़्वाहिश नहीं।
परोपकार मेरा धर्म है और कोई भी धर्म निभाता नहीं।
'निष्काम कर्म' मंत्र है मेरा और कोई मंत्र जपता नहीं।